Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

औपनिवेशिक भारत में प्रतिरोध की पत्रकारिता : चांद के 'फांसी' अंक का पुनर्पाठ और इतिहास लेखन

डॉ तनवीर हुसैन
इतिहास विभाग गांधी फैज़ ए आम कॉलेज, शाहजहांपुर (उ.प्र.)
Email:- tanveerpasha2013@gmail.com

सारांश

औपनिवेशिक भारत में पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं रही, बल्कि उसने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण, वैचारिक संघर्ष और राजनीतिक प्रतिरोध को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की। हिंदी पत्रिका 'चाँद' का 'फाँसी अंक' इस संदर्भ में एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैचारिक दस्तावेज के रूप में सामने आता है। यह विशेषांक भारतीय क्रांतिकारियों के जीवन, उनके बलिदान और औपनिवेशिक शासन की दमनकारी नीतियों को उजागर करता है तथा 1857 के विद्रोह से लेकर 20वीं सदी के क्रांतिकारी आंदोलनों तक एक वैचारिक निरंतरता स्थापित करता है।

इस अंक की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें क्रांतिकारियों के जीवन को केवल ऐतिहासिक तथ्यों के रूप में नहीं, बल्कि प्रेरणादायक आख्यानों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। त्याग, साहस और बलिदान की भावनात्मक प्रस्तुति पाठकों में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करती है। 'फाँसी' को दंड के बजाय गौरव और शहादत के प्रतीक के रूप में चित्रित करना इसकी वैचारिक शक्ति को दर्शाता है। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय क्रांतियों के उदाहरणों के माध्यम से यह स्वतंत्रता संघर्ष को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में स्थापित करता है।

ब्रिटिश सरकार द्वारा इस अंक का जब्त किया जाना इस बात का प्रमाण है कि यह औपनिवेशिक सत्ता के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका था। यह केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि जनता को संगठित करने और प्रतिरोध के लिए प्रेरित करने का माध्यम था। प्रतीकात्मक भाषा और रूपकों के माध्यम से इसने औपनिवेशिक सेंसरशिप का भी प्रभावी ढंग से सामना किया।

अतः 'फाँसी अंक' न केवल एक ऐतिहासिक स्रोत है, बल्कि एक सक्रिय वैचारिक हस्तक्षेप भी है, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को दिशा और गति प्रदान की तथा पत्रकारिता को वैचारिक संघर्ष का सशक्त उपकरण सिद्ध किया।

मुख्य शब्द: फांसी, पत्रकारिता, औपनिवेशिक शासन, क्रांतिकारी, संघर्ष आदि ।

प्रस्तावना

भारत में पत्रकारिता की शुरुआत 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से मानी जाती है । प्रारंभ में यह अंग्रेजी भाषा तक सीमित थी लेकिन 19वीं सदीं में भारतीय भाषाओं में पत्र पत्रिकाओं का विकास हुआ जिसका जनमानस पर व्यापक प्रभाव हुआ । अब पत्रकारिता केवल समाचार देने तक सीमित सीमित न रही बल्कि एक शक्तिशाली वैचारिक प्रतिरोध का माध्यम बनकर उभरी । जब कभी प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन पर प्रतिबंध लगाए गए तब भारतीय प्रेस ने विचारों, लेखों और संपादकीय पृष्ठों के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी ।

स्वतन्त्रता संग्राम के सारे क्रांतिवीर मूलतः कवि, शायर अथवा लेखक थे और कई-कई भाषाओं के विद्वान थे । यह विद्वता उन्होंने

Author:- Tanveer Hushan
Email:-tanveerpasha2013@gmail.com
Received:- 04 November, 2025
Accepted:-19 November, 2025
Available online: 30 November, 2025
Published by JSSCES.
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 International License

Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

स्वाध्याय से अर्जित की थी । उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से जनचेतना एवं राष्ट्रवाद को जाग्रत करने का सफल प्रयास किया । उन्नीसवी सदी की पत्रकारिता ने बीसवीं सदी को संघर्षशीलता, जीवत और जिजीविषा, उददेश्य के प्रति समर्पण और कठिन से कठिन चुनौती का सामना करने का माद्दा विरासत में सौंपा ।

नवम्बर 1922 में प्रयाग से रामरखसिंह सहगल ने मूलतः स्त्रियों के सर्वांगीण उत्थान पर केन्द्रित पत्रिका 'चाँद' का प्रकाशन किया था । यह सचित्र मासिक पत्रिका थी । चाँद की पृष्ठ संख्या सामान्यतः 80 रहती थी । वार्षिक मूल्य साढ़े छह रुपये था । विशेषांकों की पृष्ठ संख्या अधिक होती थी । अपनी प्रखरता के कारण चाँद ने हिन्दी जगत में विशिष्ट स्थान बना लिया था । इसकी प्रसार संख्या 15,000 तक पहुँच गई थी । कुछ समय पश्चात इसकी विषय वस्तु का दायरा समग्र सामाजिक सरोकार हो गया । 1925 में चण्डी प्रसाद हृदेयंश 'चाँद' के सम्मादक मण्डल में शामिल हुए और 1926 में नंदकिशोर तिवारी का सहयोग मिलने लगा । 1925 में 'वैश्य अंक' और मई, 1927 में जब 'चाँद' ने 'अछूतांक' का प्रकाशन किया, तब 'माधुरी' ने टिप्पणी लिखी सहयोगी 'चाँद' के लिए विशेषांकों का निकालना मामूली बात हो गई है । 'चाँद' ने हिन्दी जगत में वह स्थान प्राप्त कर लिया है जो हिन्दी भाषा ही के लिए नहीं किसी भी भारतीय भाषा के लिए गौरव की बात है । 'अर्जुन' ने लिखा "चाँद के साधारण अंक भी कई पत्रिकाओं के विशेषांकों का मुकाबला करते है, सम्पादकीय टिप्पणियों को पढ़ते समय अनुभव होता है कि लेखक के हृदय में समाज सुधार की लगन कितनी प्रचण्ड है ।"

'चाँद' का 'फांसी अंक' नवम्बर 1928 में दीपावली के अवसर पर निकला था । विशेषांक सम्पादक चतुरसेन शास्त्री ने अग्रलेख में लिखा - "फांसी अंक को दिवाली की अमावस्या समझिए । देखिए स्थान-स्थान पर कैसी ज्वलंत अग्नि धाँय-धाँय कर जल रही है और सबके बीच में जाग्रत ज्योति-मृत्यु-सुन्दरी, कैसा श्रृंगार किए छम-छम कर नाच रही है । पूजो! भाग्यहीन भारत के राजपाट, अधिकार सत्ता और शक्तिहीन नर-नारियों, यही तुम्हारी गृहलक्ष्मी है, यह मृत्यु सुन्दरी, यही अक्षय यौवना यही महा महिमामयी, महामाया । तुम इसे प्यार करो, इससे परिचय प्राप्त करो, इसे वरो, तब तुम देखोगे कि ज्यों ही यह तुम्हारे गले का फन्दा होने के स्थान पर हृदय का तारा बनेगी, तुम्हारी सहस्त्रों वर्ष की गुलामी दूर हो जायगी ? जैसे प्रबल रासायनिक के हाथ में आकर काल-कूट विष अमृत के समान प्रभावकारी हो जाता है, उसी प्रकार यह गले का फंदा बहिनों का सौभाग्य-सिन्दूर और भाइयों की कुमकुम की पिचकारी बनेगी । ओह ! उस फाग का उल्लास कब भारत की 22 करोड़ गोपियों को नसीब होगा । यह अक्षय-सुन्दरी को राधा-पद देकर कब वह कृष्ण मूर्ति स्फूर्ति की वंशी बजायेगी ? कब ? कब ?? कब ???

" निकट ही वह दिन है । कुछ मास व कुछ वर्ष व्यतीत होने दो-एक महान विप्लव की आंधी साँय-साँय करती चली आ रही है, जो पचासों वर्ष तक भारत को दिवाली के दिए न जलाने देगी, परन्तु उसके बाद जो दिए जलेगें वे क्षुद्र मिट्टी के टिमटिमाते दिए न होंगे- वे होंगे रक्तदीप, और उन्हें साक्षात् राज्य लक्ष्मी अपने हाथों से जलावेगी । तब तक बहिनों और भाइयो ! इस शुभदिन में इस वीर गम्भीर मृत्यु-बाणों से क्रीड़ा करो । जिन्हें साहस हो वे अभ्यास करें, जिन्हें न हो वे देखें । उदीयमान जातियाँ विशेष अवसरों पर विनोद नहीं करती, वेदना स्थलों की जाँच किया करती है । भारत के विनोद और उल्लास के दिन नहीं, भारत के दिन मृत्युवाद के अध्ययन करने के है । भारत को निकट भविष्य में उसकी परीक्षा में उत्तीर्ण होना है और बहिन और भाई को 'मृत्युंजय' की उपाधि प्राप्त करना है । चाँद इस अंक के रूप में उस परीक्षा की प्रथम पुस्तक अपनी बहिनों और भाइयों के हाथ में भेंट करता है ।"

अपेक्षा अनुरूप 'चाँद' के फांसी अंक ने बड़ी सनसनी फैलाई । ब्रिटिश सरकार ने इस भय से कि यह अंक भारतीयों में क्रांति की भावना भड़काएगा, 'फांसी अंक' को जब्त कर लिया । सरकार का क्रोध अंक जब्त करके ही शांत नहीं

Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

हुआ । फिरंगी हुकूमत ने 'चाँद' को मानो बर्बाद करने की ठान ली थी । इसकी प्रतिकूल प्रतिक्रिया भी हुई । आगरा के 'आर्यमित्र' ने 'चाँद पर संकट' शीर्षक से यह टिप्पणी लिखी "प्रयाग से प्रकाशित होने वाला सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'चाँद' कुछ दिनों से सरकार का कोपभाजन बना हुआ है । पहले उसका 'फांसी अंक' जब्त कर लिया गया, फिर चाँद कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'भारत में अंग्रेजी राज' जैसी अनमोल पुस्तक की बारी आई । इसके अनन्तर युक्त प्रान्त सरकार ने 'चाँद' का नाम स्कूल कालिजों के लिए स्वीकृत पत्रों की सूची से काटा और अब सी.पी. सरकार ने भी अपनी शिक्षण संस्थाओं से इसका बहिष्कार कर दिया । परन्तु यह बात अभी तक नहीं मालूम हुई कि चाँद का अपराध क्या है, जिसके कारण उसे इस प्रकार सरकार के क्रोध का लक्ष्य बनना पड़ा है । अगर सरकार की दृष्टि में उसका फांसी अंक आपत्तिजनक था तो वह जब्त कर लिया गया और वह मामला वही ख़त्म हो जाना चाहिए था । परन्तु नहीं सरकार तो चाहती है कि उसकी शिक्षा संस्थाओं में उसका प्रवेश न हो ।" फांसी अंक में भारत के क्रांतिकारियों और शहीदों की गाथाएं, देश-विदेश में राजनीतिक दृष्टिकोण से दी गई फांसी की सजा और हत्याओं का रोंगटे खड़े कर देने वाला विवरण दिया गया है । 1857 की क्रांति, कुका विद्रोह तथा इसी तरह के प्रसंगों पर प्रमाणिक और विचारोत्तेजक सामग्री दी गई है । विचारोत्तेजक लेखों, कविताओं, कहानियों का मूल स्वर एक ही है- क्रांति और स्वातंत्र्य चेतना । एक प्रकार से 'चाँद' का फांसी अंक बलिपथ के अनुगामी क्रांतिकारियों के संकल्प का प्रवक्ता बन कर आया था ।

इस अंक में फांसी पर चढ़ाए गए शहीद पत्रकारों के जीवनवृत्त तो है ही, साथ फ्रांस की स्त्रियों, यूरोप, स्काटलैंड, रोम आदि प्रसिद्ध देशों के नायक-नायिकाओं के बलिदानों की कहानी से संबंधित सामग्री, विभिन्न देशों की क्रान्तियों का इतिहास और उनके चित्र भी अंकित है । फ्रांस की राज्यक्रांति, 1857 का विद्रोह, प्राणदंड की क्रूरता आदि की जानकारी भी उपलब्ध है । यह अंक वास्तव में दस्तावेजी महत्व का है । अंक में भले ही ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध खुला विद्रोह और बगावत की बात नहीं कही गई परन्तु संकलित सामग्री प्रमाणिक, ऐतिहासिक और मार्मिक है जो प्रकारांतर से विद्रोह और बगावत को बढ़ाने वाली है । इस अंक का ऐतिहासिक महत्व इसलिए भी है कि अमर शहीद सरदार भगत सिंह ने छद्म नाम से इस अंक में अनेक लेख लिखे है । बलवंत सिंह, युवक और विद्रोह आदि छद्मनामों से भगतसिंह 'मतवाला', 'प्रताप' आदि अनेक पत्रिकाओं में लेख लिखते थे । इस अंक में डॉ. मथुरासिंह और बलवंत सिंह छद्म नामों से कुछ लेख लिखे थे । आलेखों, के नीचे जो नाम दिए गए है, वे छद्म नाम है और उनके बारे में यह कहना कठिन है कि उनमें से कौन से सरदार भगत सिंह के है और कौन से अन्य व्यक्तियों के है । फांसी अंक ने एक ओर राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए प्राणों का बलिदान आवश्यक माना है तो दूसरी ओर भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में प्राणदंड और फांसी को क्रूर, अमानुषिक और पाशविक व्यवहार घोषित किया है । जो आधुनिकता और प्रगतिवादिता का द्योतक है । यही इस अंक का मूल स्वर है । इस अंक का संपादकीय 'क्रांतिवाद' निश्चित ही क्रांति के व्यावहारिक पहलू की सार्थकता को सिद्ध करता है ।

इस अंक के संपादक के रूप में आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखते है "क्रांति एक स्थिर सत्य है, पर यह बात सर्वथा असंभव है कि सत्य सब अवस्थाओं में मधुर एवं दर्शनीय हो । भावनाओं का मूल्य वास्तव में विपत्ति है और कोई भी सद्भावना उतनी ही ऊँची उतरती है । जितनी कि विपत्तियों में वह स्थायी रहती है । सद्भावनाएं भी कभी-कभी देखने में कुत्सित और भीषण हो जाती है । जैसे खोटे सोने से खोटापन निकालने को जब उसे तेज़ाब में पकाते हैं, तब उसका जैसा वीभत्स, मैला और भीषण रूप बनता है, वैसे ही जब सत्य कलुषित स्वार्थों से पद-दलित होता है तो विशुद्ध होने के लिए सत्य को भीषण होना पड़ता है । क्रांति भी सत्य का एक भीषण रूप है । वह चाहे जैसी भयानक क्यों न हो, सदा सत्य की पवित्रता और शांति की पुनर्रचना के लिए ही होती है । 'क्रांति' एक बड़ा डरावना शब्द है । शांतिप्रिय लोग, चाहे वे कितने ही संपन्न और सशक्त क्यों न हो, क्रांति के नाम से डरते हैं । कोई

Janak: A Journal of Humanities
(I S S N : 3 1 1 7 - 3 4 6 2) Volume: 01, Issue: 02, November, 2025
Available on https://janakajournal.in/index.php/1/about

राजसत्ता चाहे कैसी ही उदार क्यों न हो, उसने क्रांति को तत्क्षण बलपूर्वक दबा देने के लिए कड़े से कड़े कानून पहले से बना रखे है । मतलब यह राजा और प्रजा दोनों ही क्रांति के नाम से कांपते है और क्रांति के बीज को तत्काल नष्ट कर देने में सबसे अधिक व्यग्रता तथा तत्परता दिखाते है । इतना सब है, फिर भी संसार के सभी सभ्य राज्यों में अच्छे से अच्छे जमानों में भारी से भारी शक्ति के सामने समय-सम पर क्रांति बराबर हुई और यद्यपि तत्कालीन सत्ताधारियों ने क्रांति के नेताओं को फांसी देन, सूली पर चढ़ाने गर्दन काटने, जिंदा जलाने, विष पिलाने और आजन्म कारावास के निर्दय और चरमसीमा के दुःख दिए है. परन्तु बाद में इतिहास ने उन्हें मुक्तकंठ से धर्मात्मा और निर्दोष माना है ।"

'फांसी' अंक में 1857 के कुछ संस्मरण भी दर्ज है जिसमें दिया है कि कैसे अंग्रेजी सेना ने गांवों को जलाकर श्मसान बना दिया । बगावत का संदेश फैलाने वाले हिंदुस्तानी सिपाहियों को तोप से कैसे उड़ा दिया गया और असहाय स्त्रियों और बच्चों का संहार कैसे किया गया । इतिहासकार जॉन अपने संस्मरण में लिखते है- "बूढ़ी औरतों और बच्चों का उसी प्रकार वध किया गया है, जिस प्रकार उन लोगों का, जो विप्लव के दोषी थे । इन लोगों को सोच समझकर फांसी नहीं दी गई, बल्कि उन्हें उनके गांव के अंदर जलाकर मार डाला गया; कहीं-कहीं उन्हें गोली से भी उड़ा दिया गया । सड़कों के चौरास्तों पर और बाजारों में जो लाशें टंगी हुई थी, उनको उतारने में सूर्योदय से सूर्यास्त तक मुर्दे ढ़ोने वाली आठ-आठ गाड़ियाँ बराबर तीन-तीन महीने तक लगी रहीं और इस प्रकार एक स्थान पर छह हज़ार मनुष्यों को झटपट खत्म करके परलोक भेज दिया गया ।

इस प्रकार 'फांसी' अंक में प्रकाशित प्रत्येक लेख विशेष है । सम्पूर्ण अंक प्रगतिवादी सोच, क्रांतिकारी विचाराधारा और राष्ट्रवाद के नए आयाम गढ़ता है । भारतीयों में क्रांति की अलख जगाने, राष्ट्रीय चेतना को संगठित रूप देने एवं नवचेतना की अभिव्यक्ति को प्रेरित करने के राष्ट्रवादी 'अपराध' में 'चाँद' पर एक के बाद एक अनेक प्रहार किये गये । चाँद ने जिस घृणित सजा 'फांसी' का प्रखर विरोध किया, अन्ततः वही राजनीतिक सजा उसे दी गई जिसके परिणामस्वरूप असमय उसका देहावसान हो गया लेकिन 'चाँद' के 'फांसी' अंक ने हिन्दी पत्रकारिता के उस शिखर को छुआ जहाँ पहुँचना वर्तमान पत्र-पत्रिकाओं के लिए दिव्यस्वप्न है ।

फांसी अंक वैचारिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण था इसने औपनिवेशिक शासन की उस वैचारिक नींव पर हमला किया जिस पर वह खड़ा था और निरंतर फल फूल रहा था । इतिहासकार एंटोनियो ग्रामसी की ' हेजेमनी' की अवधारणा के अनुसार, सत्ता केवल बल प्रयोग से नहीं चलती बल्कि वह वैचारिक सहमति के माध्यम से अपने प्रभुत्व को बनाए रखती है । औपनिवेशिक भारत में ब्रिटिश शासन ने शिक्षा कानून और प्रशासनिक ढांचे के माध्यम से अपनी वैधता स्थापित करने का प्रयास किया । 'फांसी' ने इसी वैधता को चुनौती दी और एक वैकल्पिक राष्ट्रवादी चेतना का निर्माण किया यह अंक पाठकों को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करता है कि औपनिवेशिक शासन नैतिक रूप से अवैध है और इसके विरुद्ध संघर्ष करना न्याय संगत है । उसका केंद्रीय तत्व 'शहादत का विमर्श' है जिसके माध्यम से क्रांतिकारियों के बलिदान को नैतिक और आध्यात्मिक ऊंचाई प्रदान की गई । यहां शहादत को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में चित्रित किया गया जो व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर राष्ट्र के लिए पूर्ण समर्पण का प्रतीक बन जाती है । क्रांतिकारियों से लोगों का भावनात्मक जुड़ाव उत्पन्न करने के लिए इसमें भाषा, प्रतीकों और भावनात्मक अपीलों का सहारा लिया गया है । उदाहरण के लिए फांसी और शाहीद (कविता) जो किसी क्रांतिकारी ने छद्म नाम 'प्रभात' से लिखी है, पाठकों को ओज और शौर्य से भरने वाली है ।

इसी प्रकार माइकल फूको के 'विमर्श और सत्ता' के सिद्धांत के आलोक में भी फांसी की वैचारिक संरचना को समझा जा सकता है । इस सिद्धांत के अनुसार सत्ता केवल संस्थाओं के माध्यम से नहीं बल्कि ज्ञान और भाषा के आधार पर भी कार्य करती है । फांसी अंक ने

औपनिवेशिक सत्ता के आधिकारिक विमर्श को चुनौती दी । जहां ब्रिटिश सरकार क्रांतिकारियों को अपराधी और विद्रोही के रूप में प्रस्तुत करती थी वहीं यह अंक उन्हें 'शहीद' और 'राष्ट्र नायक' के रूप में स्थापित करता है । फांसी की वैचारिक संरचना में भावनात्मक राजनीति का भी महत्वपूर्ण स्थान है । यह क्रांतिकारियों की जीवन गाथाओं उनकी अंतिम इच्छाओं और उनके बलिदान के वर्णन के माध्यम से पाठकों के भीतर शोक, क्रोध, गर्व और प्रेरणा जैसी भावनाएं उत्पन्न करती है । इस प्रकार यह एक राजनीतिक उपकरण साबित हुआ जिसने निष्क्रिय पाठकों को राजनीतिक चेतनापूर्ण नागरिकों में बदल दिया ।

फांसी अंक का इतिहास लेखन विभिन्न वैचारिक दृष्टिकोण के अंतर्गत विकसित हुआ और यह इसे एक बहुआयामी ऐतिहासिक स्रोत के रूप में स्थापित करता है । इस विशेषांक को समझने के लिए राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, उपनिवेश उत्तर तथा सांस्कृतिक अध्ययन जैसे विभिन्न दृष्टिकोण का सहारा लिया गया है जिसके माध्यम से इसके अर्थ और महत्व को अलग-अलग तरीके से व्याख्यायित किया गया है ।

राष्ट्रवादी इतिहास लेखन में फांसी अंक को मुख्यतः देशभक्ति बलिदान अथवा केंद्रीय चेतना के प्रतीक के रूप में देखा गया है । इस दृष्टिकोण के अनुसार यह अंक उन क्रांतिकारियों की शहादत को महिमामंडित करता है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण निछावर किया । राष्ट्रवादी इतिहासकारों का मानना है कि इस प्रकार के प्रकाशनों ने जनता में राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता की भावना को सुदृढ़ किया तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जन आंदोलन को वैचारिक ऊर्जा प्रदान की । इसके इतर मार्क्सवादी इतिहास लेखन दृष्टिकोण 'फांसी' को वर्ग संघर्ष और औपनिवेशिक शोषण के व्यापक संदर्भ में देखता है इस दृष्टिकोण के अनुसार यह अंक केवल राष्ट्रवादी भावना का प्रतिनिधित्व नहीं करता बल्कि यह औपनिवेशिक आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं के विरुद्ध एक प्रतिरोध भी है ।

सन्दर्भ :-

1. विजयदत्त श्रीधर, भारतीय पत्रकारिता कोश, खण्ड-दो, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2010, पृ०-768
2. वही
3. माधुरी, वर्ष-5, खण्ड-2, संख्या-5
4. अर्जुन, 13 नवम्बर, 1927
5. विजयदत्त श्रीधर, पृ०-771
6. आर्यमित्र, 19 सितम्बर, 1929
7. विजयदत्त श्रीधर, पृ०-772
8. चाँद, फाँसी अंक, भूमिकाः नरेशचन्द्र चतुर्वेदी, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1988, भूमिका
9. वही, संपादकीय विचार 'क्रांतिवाद', पृ०-8, 9
10. सन 57 के कुछ संस्मरण, 'चाँद' का 'फाँसी' अंक, पृ०-149-150.